

an>

Title: Regarding separate colour code and symbol for generic drugs.

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे (मावल): देश में सरकार द्वारा जेनेरिक दवाइयों को उपलब्ध कराये जाने का काम किया जा रहा है और देश की आम और गरीब जनता ने इस पर भरोसा भी किया है, लेकिन जेनेरिक दवाइयाँ अन्य दवाइयों से सस्ती हैं और जो लोग इन दवाइयों को खरीदते हैं, वह इन जेनेरिक दवाइयों का वास्तविक मूल्य नहीं जानते हैं।

जेनेरिक दवाइयों की पहचान के प्रमाण सरकार ने तय नहीं किए, जिससे जेनेरिक और अन्य दवाइयों में अंतर करना मुश्किल हो जाता है। अगर कोई 10 टेबलेट वाली दवाई का बाजार मूल्य 90 रु. है तो इसी जेनेरिक दवाई का मूल्य केवल 30 रु. है। जो व्यक्ति इन जेनेरिक दवाइयों को नहीं पहचानते, उन्हें इन दवाईओं को बाजार से खरीदना पड़ता है। देश की आम गरीब जनता के लिए बनी इस योजना में सरकार की अनदेखी और जनता में जागरूकता की कमी के कारण इस योजना में व्यापारी और बिचौलिये जनता को ठगने का काम कर रहे हैं।

जिस प्रकार खाने की चीजों की पहचान शाकाहारी और माँसाहारी चिह्न के द्वारा की जाती है। उसी प्रकार चिह्न या रंग के द्वारा जेनेरिक दवाइयों की पहचान भी सुरक्षित किये जाने की आवश्यकता है।

अतः सरकार ऐसे कदम उठाए जिससे अन्य दवाइयों और जेनेरिक दवाइयों की पहचान का अंतर ज्यादा आसान हो सके और व्यापारी और बिचौलियों द्वारा इस योजना में जनता को ठगे जाने से रोका जा सके।